अपने बारे में

.....

ब्हुत ही मुश्किल होता है कुछ लिखना अपने बारे में, पर कोशिश करुगा । मेरा जन्म दिल्ली मे हुआ था 1944 जुलाई 16 को । मेरा बचपन बहुत ही समान्य रहा होगा पर मेरे नाना ब बाबा जी काफी धनवान थे ब अपनी अपनी जगह ब जाती मे जाने माने परिवारो मे गिने जाते थे । पर पहले हमारे पैत्रिक परिवार मे उतार आने लगा । आज हम जो भी है उसका श्रेय मेरी विदूशी माँ को जाता है । मेरी माँ के पांच बच्चे हुये और सभी पढने मे तेज थे और आज सभी सम्पन्न व अपने अपने क्षेत्रो मे सफल है जो सभी अलग अलग है एक डाक्टर, ईन्जीनियर, कलाकार, एकाउन्टेन्ट व वकील सभी के पास एक से ज्यादा डिग्रीयाँ है । मेरा नम्बर दूसरा है मैने खडगपुर से सिविल मे आर्नस से सन 1968

मे पास करा फिर 11 साल तक भारत मे काम किया कई स्थानो पर जिसमे भिलाई स्टील प्लांट की पलेट मिल का डिजाईन ब प्रेसिडेन्ट जाकिर हुसैन के मकबरे का डिजाईन । फिर भारत मे रश्मि जी के साथ 1971 मे शादी हुइ फिर दो लडके हुये यश1971 & गौरव 1974 मे।1979 मे अमरीका आ गये बाल बच्चो के साथ । 1982 मे मिचिगन से MS किया । 1968 मे हिन्दी मे एक लेख लिखा था दिल जो नेहरु हाल की पत्रिका मे छपा था । अब हमारा परिवार ग्यरहा सदस्यो का है मेरी माँ कैलाश, हम दोनो, दो पुत्र यश ओर गौरव, दो पुत्र बहुये लवी, तारा, दो पोत्री मेघन, अन्नया, दो पौत्र मैथूय माईकल।

जीवन साथी मिला जो कल्पना से परे था पर मन के अनुकूल है पढाई मे अबवल हैं अपने सोचने के तरीके मे अपनी ही तरह है ।संस्कृत मे MA हैं । हम दोनो मिल कर जो भी परिकल्पना करते है पिछले 39 सालो से एक साथ भगवान उसे पूरी कर देते हैं यह हमारा सौभाग्य है इसलिये हम परमात्मा के आभारी हैं । सोचा था कि दुनिया मे दो अच्छे नागरिक छोड जायेगे अपने पीछे हमे कहते हुये गर्व हो रहा है कि भगवान यह ईच्छा भी हमारी सुन ली हमारे दोनो वच्चे अगर जरुरत पडेगी तो जो भी उनके पास होगा उसको बाट के खा सकते हैं वह कमाने के लिये क्या करते है यह जरुरी कहने की बात नही हैं। पढने का मतलब पैसा कमाना नही होता है या अमीरो को और ज्यादा अमीर बनाना नही है यह बात हमे भी देर से पता चली । फिर हमने सोचा क्यो न अब हम गरीबो को समर्थ बनाये ताकि बह अपनी समस्याओ को खुद हल कर पाये और आगे बढे । क्योकि कोई भी दूसरो की समस्याये क्यो हल करेगा जब तक उसका अपना कोई निहित स्वार्थ नही होगा ।

हमने पिछले दस सालो मे भारत मे करीब चार सौ गाँवो का भ्रमण किया होगा भारत के बीस राज्यो में । स्वास्थ, पढाई, सफाई, पानी, घर, व्यवसाय, सभी समस्याओ का अध्यन किया कुछ सुझाव भी दिये जो कार्यविन्त भी हुये तो मन किया क्यो न इनको लिपी बध्य न कर लिया जाय , तो लिखना आरम्भ कर दिया तो करीब दो सौ से अधिक हिन्दी ब अंग्रेजी दोनो मे ही लिखे बह भारत मे ब अमरीका की पत्रिकाओ दोनो मे छपे कुछ और भाषाओ गुजराती, मराठी, नेपाली, बँगाली और कुछ दझिण की लिपी मे अनुवाद भी छपे । अधिक जानकारी के लिये हमारी बेब साईट देखें । हमने अपनी जिन्दगी के पहले पैतिस साल भारत मे, फिर तीस साल अमरीका मे विताये और बहुत कुछ सीखा अन्तर महसूस किया दोनो ही जगह कमिया है पर समस्याओ को हल करने के तरीके भी फरक नजर आये और दोनो ही जगहो पर मौके भी मिले सुधार के, लोग मानने को भी तैय्यार हुये काम पूरे भी कर पाये सबके सहयोग से।

हाल ही मे जो नये काम हम कर पाये बह है एक सौ चौदह घरो का नया गाँव सुरसरधाम रपर कच्छ गुजरात मे बनाया भूकम्प के बाद । उसमे हमने सूर्य से चलित बीस सडक लाईट भी लगबाई । फिर पुराने दो सौ पचास कम्पुटर ईकक्ठे किये जिनको ठीक करा के भारत के हापुड् के स्कूल व दीन दयाल संस्थान चित्रकूट के

स्कूलो व आफिसो मे लगे हुये है । अभी पिछले साल एक नई बात मन मे आई कि क्यो न भारत के गाँवो को सूर्य चलित सईकिलो से जोडा जाय ताकि पेट्रोल व पर्यावरण दोनो की रक्झा की जाय । और भी कई सपने है जिनको पूरा करने का मन है उन्हे यहाँ लिखना आप सब के साथ ज्याती होगी। ईन सब के कामो के लिये करीब दो करोड रुपये भारत के लिये अपने, दोस्तो, परिवार और संस्थानो से भारत व अमरीका के,हमारे माध्यम से खर्च किये जा चुके हैं पिछले सात वर्षो में। यह हम समझते है कि यह भगवान की कृपा का फल हैं । बिजली की साईकिल भारत मे आ गई है।
भारत मे अदी वासी क्षेत्र मे एक विश्वविद्यालय बनाने के लिये हमारे घर वालो ने एक मिलियन रुपये देना का प्रण किया है मेरी माँ ने अपने जीवन की सारी जमा पूंजी`सके लिये दान कर दी है यह महत्वपूर्ण बात है हमे अपनी माँ से अभी भी सीखने को मिल जाता है ।
इस के आलावा हम वेघरवार बालो की, अमरीका मे पिछले बीस सालो से मदद कर रहें हैं। मिचिगान यूनिर्वसटी के कम्पूटर डिपार्टमेन्ट मे पन्द्रह सालो से सलहकार की तरह काम कर रहा हूँ । कई जगहो से समाज सेवा के लिये हम दोनो को सम्मानित किया गया हैं । स्थानिये भारतीय समाज ने भी समाज सेवा के लिये मान पत्र दिया हुआ हैं अमरीका मे भारत के राजदूत माननीय कौल के कर कमलो से।
ज्यादा जानकारी के लिये हमारी बेब साईट पर हमारा सोशल काम का लेख अंग्रेजी मे देख सकते हैं । सनातन धर्म के अनुयायी होने के नाते कई हिन्दू मन्दिरो की स्थापना, निर्माण मे सहयोग किया है और ज्यादातर मे अजन्म के लिये सदस्यता ग्रहण कर रक्खी हैं ईसी तरह दो हिन्दी के संस्थानो की भी अजन्म की सदस्यता ले रक्खी हैं भारतीय इन्जिनरो की सन्था की शुरुरात की, भारतीय के लिये अमरीकी राजनीति मे भाग लेने की प्रकिर्या भी शुरु की थी। पर सभी धर्म के अनुयायिओ को मदद करना अपना ध्येय हैं । इसलिये हर जगहो पर सम्मान के साथ बुलाया जाता है जब सित्मबर ग्यारह का हमला हुआ तो सर्व धर्म सभा नौवी मे हुई प्रार्थाना के लिये अमंत्रित किया गया था ।

अखिर मे एक बात जो हम अपने जीबन की धुरी की तरह है कि अगर जीवन को चार चरणो मे बाट दिया जाय और मान लो जीवन सौ साल का है तो पहले दो चरणो मे समाज से लो और अगले दो चरणो मे समाज को दो जो तुम्हारे पास ईक्कठा हो गया है।क्योकि वही तुम दे ही नही सकते, जो तुम्हारे पास नही हैं । अगर जोडने की प्रर्किया मे ही लगे रहोगे तो दे कैसे सकते हो, दस गुना पाने के लिये दसांश दान देना ही होगा ।हम जो भी कामपूरा कर पाये है उसमे भगवान के अलाव बहुत लोगो ने सहयोग दिया है हम इन सबके भगवान को सम्मिलित करके आभारी है ।

Umesh Rashmi Rohatgi 24161Nilan Drive Novi MI 48375USA Tel:(248)-471-5786

"Email: rurohatgi@yahoo.com" Web page : www.ruroatgi.com Updated 09/09/09